डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया

बुन्देली बिबिधा

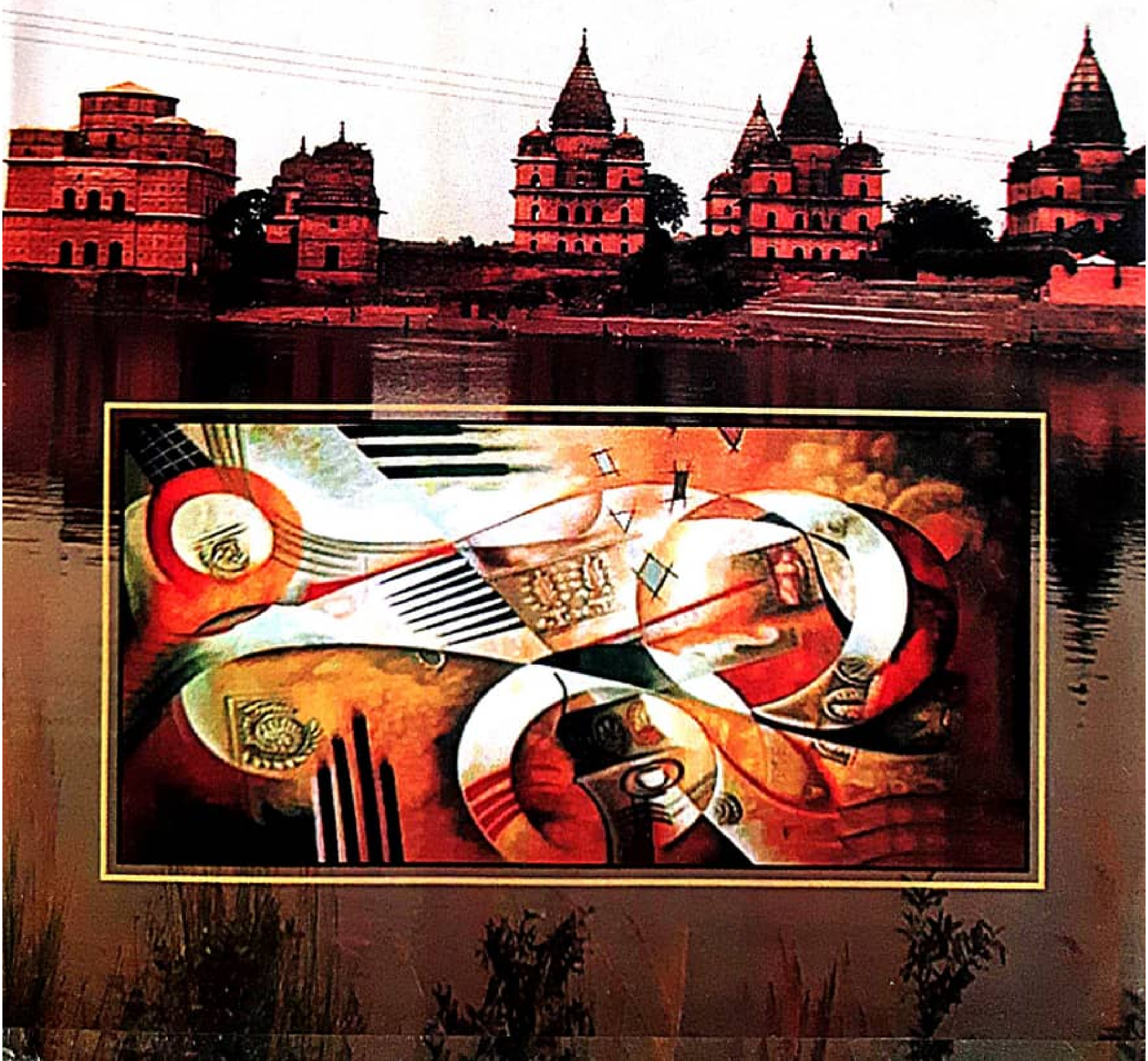

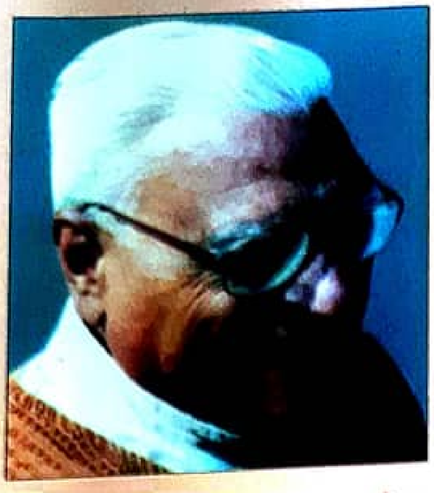

डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया

जन्म स्थान : भौंरी, जिला : बांदा (अब चित्रकूट, उ.प्र.)

जन्मतिथि : 6 फरवरी, 1937

सेवा : म.प्र. के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य। स्नातकोत्तर प्राचार्य पद से 31 दिसम्बर 1996 को सेवानिवृत्ति।

योग्यता : एम.ए. (हिन्दी), पीएच.डी. (सन्-1964), जबलपुर विश्वद्यालय, विषय- हिंदी साहित्य में व्यक्तिवादी निबंध और निबंधकार।

प्रकाशन : विभिन्न विषयों पर 31 पुस्तकें प्रकाशित।

अन्य प्रकाशन : लगभग 200 शोधपरक निबंधों का देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन तथा अनेक ग्रंथों में संकलन। समय-समय पर अनेक-शोध-पत्रिकाओं, स्मारिकाओं व ग्रंथों का संपादन।

शोध निर्देशन : 12 शोधार्थियों को मेरे निर्देशन में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त।

(शेष दूसरे फ्लैप पर)

बुन्देली बिबिधा

डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-93-87622-29-6

अयन प्रकाशन
1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030
दूरभाष : 9818988613
e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com
website : www.ayanprakashan.com

•

मूल्य : 250.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2017 © डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया

BUNDELI BIBIDHA (Essays)
by Dr. Ganga Prasad Barsainya

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

अनुक्रम

1.	संग्रह के संबंध में	5
2.	जैसई करनी ऊसई भरनी	11
3.	लालच बुरी बलाय	28
4.	करवरटाइगो	31
5.	साहित्य सर्विस सेंटर	38
6.	इंसानियत की मिठास	46
7.	बदलाव	55
8.	मों देखी पंच्यात	63
9.	बोलता आत्मविश्वास	74
10.	कामचोर मुरगा	79
11.	बुन्देला फागन में भाव वैविध्य	81
12.	कैसे के दरसन पाऊँरी	87
13.	बुन्देली लोकगीतों में रामकथा	93
14.	समय के साथ यात्रा करती बुंदेली की अभिव्यंजना शक्ति	108

संग्रह के संबंध में

लोक साहित्य औ साहित्य खों अलग-अगल मानबौ एक पेड़ काटकें ऊकी जड़न सें अलग करबौ आय। लोक तौ साहित्य कौ प्रान आय। ऊ लोक में रस है, जीवन है, प्रेम औ प्रेरना है। जौइ लोकरस के कंठ से प्रवाहित होत, तौ बोई लोकगीत बन जात। येई जनगीत जब लय के संगै शब्दन कौ रूप पा जात, तब जौ जान पाबो भौत कठन हो जात कै उनखों कौन नें औ कबै शब्दन कौ रूप दै दओ। जैसे जंगल होत। ऊके खुले बातावरन में तमाम पेड़-पौधा, लता-वनस्पतियाँ उपजतीं औ फैलतीं। उनइँ सबन खाँ मिलाकें जंगल कओ जात। कोऊ जौ नइँ कै सकत कै इनै कौंन नें बोओ, लगाओ, उपजाओ। जे सब अपनेइ आप सहजइ होत रैत। ऊसई लोकमन और लोककंठन की विशेषता होत। खुले आसमान के नैचें फैले बातावरन के बीच जन-मन के मनोभाव सोई सहज उच्चरित होत रैत। जोई जन-मन दुख में रोउत औ सुख में आनन्दित होत। पै दोऊ हालात में गाउत। ऊको रोबौ लौ लोकगीत बन जात औ गाबौ लौ। इन लोकगीतन में सबरे लोक जीवन की छबि मिल जात। इनें जा बात की तनकउ फिकर नइँ रैत कै उनें काऊ ने पोथिन में जगा दई कै नइँ। पढ़े-लिखे विद्वानन नें उनें मान दओ कै नइँ। वौ सब तौ लोकमन की मस्ती कौ स्वर होत, जौंन हवा-पानी जैसो सबरेंहार अपनेइ आप फैलत रैत। ओई सबको लोक साहित्य कओ जात।

लोक साहित्य की गद्य-पद्य दोउन में समान गति होत। लोक में तौ शब्दन कौ अकूत भंडार होत। उनें शब्दकोसन कौ सहारौ नइँ लेने परत। उनकी अपने जीवन की बोली-बानी उनको शब्दकोस होत। लोक की बोलचाल सें शब्दकोस बनत। शब्दकोसन से लोकसाहित्य नइँ बनत। न उनें ब्याकरन चाँवने औ न शब्दकोस। समै के संगै, लोक-जीवन में बदलाव सोई आउत। जौ हमेसई सें भओ है। हजारन साल सें लोकजीवन की धारा बरोबर चली आ रई। कऊँ कौनऊँ बात कौ टोटौ नइँ परो। नई-नई बातें

जुरत रइँ। कोउ जान न सको कबै कौन नें कैसें जोर दई। लोक साहित्य में अन्त नइँ होत। कौनऊँ ब्याकरन सें सोऊ नइँ बँधो। हर दुख-सुख, पर्व-त्योहार, रीति-रिवाज, नेंग-दस्तूरन के मुलक लोकगीतन कौ अक्षय भंडार है। औसर पाकें अपने आपइँ लोककंठ कौ स्वर फूट परत। कऊँ अकेले में औ कऊँ समूह में। इनमें कोनउँ भेदभाव नइँ होत। न जात-पाँत कौ, न ऊँच-नीच कौ, न छोटे-बड़े कौ। सबके लानें सब। शिष्ट या लिखित साहित्य कौ आधार जोई लोकसाहित्य बनत। एईसें ऊखों प्रेरणा औ प्रान मिलत। ऊर्जा औ शक्ति कौ मूल आय जौ लोक साहित्य। लोक-चित्त की कल्पनायें बड़ी नोंनीं औ बिचित्र होतीं। ऊकी कहनातें, मुहाबरे, अलगई तरां के होत। किसा-कांनियन की दुनियाँ अद्भुत होत। जौइ सब मिल पौंच कें शिप्ट साहित्य खों नई-नई कल्पना और सुन्दरता से रमनीक बनाउत। बाद में लिखित ज्ञान और बांगमय की पोथिन कौ अंग बन जातीं। ईसे साफ हो गओ लोकसाहित्य या शिष्ट साहित्य कौ अलग-करबो अपनी जरन पै कुल्हारी चलाबो आय। दोई आपस में एक हैं। अभिन्न हैं।

लोकसाहित्य औ साहित्य में थोरो अन्तर जरूर है, ईसें इनकार नई करो जा सकत। साहित्य लिखित होत, खूब सोच-समझ कें लिखो जात। ब्याकरन औ भाषा शास्त्रन के नियम औ अनुशासन से बँधो होत। परिष्कृत औ शुद्ध होत। ऊमें दोहराबो (पुनरावृत्ति) ठीक नई मानी जात। जबकें लोकसाहित्य में एकई बात खों बार-बार दौहराबे में आनंद मिलत। साहित्य कौनऊँ खास नाम से जानो जात। लोक साहित्य में नांव गाँव कौ अतौ-पतौ नई रैत। लोक साहित्य में जनीं मान्सन के संगै पशु-पक्षी, वनस्पतियन कौ सोई, पात्र के रूप में प्रयोग करो जात जबकै साहित्य में जनी-मान्सई पात्र होत। साहित्य में भाव-भाषा की शुद्धता पै खास ध्यान दओ जात। लोक साहित्य शुद्धता-अशुद्धता के फेर में नइँ परत। जो मन में आओ सो गा-बजा चले। ऊमें छन्द-मात्रा जैसौ बंधन नई होत, हाँ -राग, लय संगीत कौ आनन्द बरोबर मिलत।

लोक साहितय की खास बात जा है कै उमें एकई तरां सें सबई सें जुड़ाव होत। सबई जात-बर्ग की लुगाईं गाउतीं- 'मोरे पैदा भये नंदलाल।'

ब्याव के बखत हर बन्ना-बन्नी राम औ सीता होत। सबई लुगाईं बड़े उछाह सें गाउतीं- 'दसरथ के लाल सिया ब्याहन आये।' हरी दूबा औ नारियल सबई की पूजा में लगत। सोने को गडुवा गंगाजल पानी घर-घर गूँजत। देवी की किंवरियाँ सबई जनन के लानें खुलतीं। हर भक्त ध्वजा-नारियल सें पूजा करत- 'कोउ चढ़ाबै मइया ध्वजा नारियल, कोउ फूलन को हार रे, रे मइया तोरे दरस कों।' गोबर के गनेस हर जगा औ हर औसर पै पुजत। उनके बिना कौनउं सुभ काज की शुरूआत नई होत। ऐसी सार्वजनीनत, ऐसो स्नेह-आस्था भरी रागात्मकता औ ऐसी एकता लोकसाहित्यई में मिलत। जा बात शिष्ट साहित्य में सब कउँ नइँ दिखत। लोक साहित्य तौ साँसउँ सदाबहार है। ऊमें रस है, आनंद है, सहजता है, प्रकृती की मनोरम छटा औ झाँकी है। भावना कौ समुद्र लहरात। जब कऊँ शिष्ट साहित्य कमजोर अथवा नीरस होत तौ ऊखौ प्रान-रस औ नई उर्जा पाबे के लानें लोक साहित्य के ऐंगर आनें परत। लोकसाहित्य अपने राग-रस सें ऊखाँ रिचार्ज करत। शिष्ट साहित्य के लानें लोक औ लोक साहित्य पुनर्नवा बटी की तरां है। साहित्य की फसल तौ लोक साहित्य की उपजाऊ धरती औ खाद पै हरियात, फलत-फूलत। लोक के बिना साहित्य कौ का महत्व? लोक तौ प्रानन कौ आधार आय। सबई कला औ सर्जना कौ। लोक सें लाई भई जीवन की-सामग्री साहित्य के द्वारा लौट के लोकई खों सौंपी जात। ईसें साफ है कै लोक साहित्य औ साहित्य कौ साँसऊँ में इक दूजे पै आश्रित होबे कौ संबंध है।

आज अक्सर अनुभव करो जात कै वर्तमान साहित्य आम जनता कै लानें अबूझ और समझ सें परे होत जात। आम पाठक ऊमें पूरौ आनंद नई लै पाउत। न उये प्रेरना मिलत, न ऊर्जा। ऐईसें भौंत सौ साहित्य जनता से दूर भओ जात। जा खास तौर से दुख औ चिंता की बात आय। लिखबे बारे बड़के लिखैया विद्वान जौ दाबा करत कै बे आमजन के लानें लिख रये, पै ऊमें आमजनता कौ भीतरी रस-भाव नइँ जुर पाउत। ईसे पूरौ आनंद नई मिलत। अपने साहित्य खौ खास बनाबे की प्रवृत्ति में साहित्य खों लोक सें भौत सीमा तक दूर कर दओ। साहित्य में तमाम विकृतियाँ सोऊ आउतीं जा

रईं। ऐसौ साहित्य भौत दिना लौ जिंदा नईं रैत। जौन साहित्य लोक से जुड़त बोई खटाऊ सबइ दिनन के लानें होत। ऐई आधार पै लोक भूम खों साहित्य की जनम भूम औ शक्तिभूम कओ गओ है। लोक साहित्य की खोज, संग्रह, संपादन औ प्रकाशन में सारी जिंदगी खपाबे बारे प्रतिष्ठित साधक विद्वान श्री देवेन्द्र सत्यार्थी जी की जा बात सोरा आना साँसी आय 'आज साहित्य लोगन सें कट गओ है, ईसें ऊमें ताजगी कम है। इसी ताजगी औ जीवन की तलाश के लानें आपको बार-बार लोगों से और लोक साहित्य से जुड़ना होगा।.... रूप की भाषा में कहूँ तो लोक साहित्य ही हमारे साहित्य की गंगा है। जब-जब हमें मैल औ प्रदूषण से मुक्ति पानी होगी या अपनी संकीर्णता से मुक्ति पाकें एक विराट प्रवाह से जुड़ने की इच्छा हममें जब-जब पैदा होगी। तब-तब इसी लोक गंगा में डुबकी लगानी पड़ेगी। दूसरी कौनउं गैल नइयाँ... अपनी आत्मा खों शुद्ध करबे औ शक्ति पाने खों।'

लोक साहित्य में छोटे-बड़े, ऊँच-नीच, सबई जनन खों संबोधित करबे ज्ञान दैबे, जगाबे, मार्गदर्शन दैबे की अद्‌भुत ताकत होत। जौंन अपने संकेतन, प्रतीकन सें बड़ी सहजता सें व्यक्त होबे की क्षमता राखत। चायें बे लोकगीत होंयँ, चाँय लोककथा, लोकगाथा, अथाई की बातें, कहनातें, टउका आदि। लोकनाट्यन में तौ अपनी बात बड़े कौसल सें लोगन लौ पौंचाबे की गजब की कला है। लोक साहित्य में राग, भक्ति, आस्था, मानवता, संवेदना, सबई के दुख-सुख में जुड़बे को भाव है। प्रकृति की नौंनीं सुन्दरता तौ लोक साहित्यई में दिखात। लोक कलाकार कैसी-कैसी उमदा छबि उकेरत। मन गद्‌गद् हो जात। ऊमें बनावटीपन नईं होत। ऊकी कल्पना औ कहबे कौ ढ़ग अनूठौ होत। 'जैसे उनके दिन फिरे, ऊँसई सबके फिरबैं।' जैसी सबई के हित की भावना ऊके मूल में होत। ऊमें उदारता, विश्वबंधुता सबई के लाने खास गुण है। लोकसाहित्य सिखाउत भी है औ सचेत सोई करत। लरका-बच्चन के मन में ऐसे संस्कार डारत कै जीवन भर उनकौ असर रैत। मिलकें रहबे की एक जुट होकें संघर्ष करबे की, बिना छल-कपट के ब्यवहार करबे की, सबके दुख-सुख में सामल होबे की आदत डारत। ऊकी धारा कऊँ सूकबे बारी न होय। ऊखाँ आदर के साथ अपनाओ चइये। ईसें समाज कौ जीवन सुखी बनहै।

बा तो साँसउं संजीवनी आय।

जा तौ भई साहित्य औ लोक साहित्य की बात। अब थोरो संग्रह के बारे में। हिन्दी में लिखत भये तौ मोकों पचपन-छप्पन साल सें ऊपरें हो गये। सन-उन्नीसौ छप्पन-सत्तावन में 'भारत' दैनिक इलाहाबाद में मोरे दो तीन लेख प्रकाशित भयेते। ऊ बखत हर लेख के दस-दस रूपैया पारिश्रमिक के सोई मिले ते। सन सत्तावनई में मोरी पैली कविता 'संघर्ष' पात्रिका जबलपुर में छपी ती। तब सें अब लौं चौतीस-पैंतीस पोथीं अलग-अलग बिसयन की छप गई। पै बुंदेली कौ कौनउ संग्रह अलग से नइँ छपो। पत्र-पत्रिकान औ दोस्तन के कए से कछु लेख, कछू एकांकी, कछू व्यंग्य, कछू कवितायें लिखीं। इतै-उतै पत्रिकन में पोथियन में छपत रई। ईसें कछू लोगन ने बुंदेली रचनन को संग्रह छपबावे की सलाह बेर-बेर दई। सो मन में सोउ आओ कै बुंदेलखंड के औ बुंदेली के बारे में तौ बिलात लिखो, अब बुंदेली को एक अलग से संग्रह भओ चइये।

मन में कछु संकोच हतो। काएसें ठेट बुंदेली में मोरी बैसी गति नई आय जैसी बुंदेली के जनुआ लिखैया विद्वानन की होत। कारन मोरौ जनम ऊ जांगा पै भओ जितै बघेली औ अवधी कौ प्रभाव जादां है। बुंदेली कौ है, पै कम। बौ क्षेत्र आय चित्रकूट कर्वी कौ। शुरू की पढ़ाई भी उतई भई। बाद में जबलपुर आबौ भओ। उतै बुंदेली कौ पूरो प्रभाव हतो पै सहर के असर में निखालिस बुंदेली न रै गई। हालाकै पुराने घरन में सियाने लोग जो बुंदेलखंड छेत्र से उतै गये, बे सुद्ध बुन्देलियई बोलत ते। उतै बुंदेली बोलबे बारन की संख्या भौत है। मैं जौंन मोहल्ला में रैत रओ, उतै बुन्देलियई खास हती। बाद में नौकरी में तबादलन में बुंदेली छेत्र से कई साल दूर राने परो। सो अभ्यास, छूटो रओ। ईकारन बुंदेली लिखबे में ऊसी महारत न रई। हालांकै संगी साथी साहित्यकार, लिखैया मोरी ई बात से सैमत नइयाँ। पै आत्मविसवास की कमी सी लगत।

जो भी होय, अब मैंने पक्को ठान लओ कै बुंदेलीलेखन कौ एक संग्रह देंने है। सो संग्रह विद्वानन के हाँतन में सौंप रये। ईमें कछु बुंदेली औ बुन्देलखंड के बारे में लेख हैं, कछू लेख लोककथा आधारित हैं। कछू

लोकगीतन पै, कछू एकांकी हैं, कछू कहानी, संस्मरण औ कछू साहित्य में बनी स्थितियन सें सोई संम्बंधित हैं। कौनउं लेख व रचना हल्की नइयाँ, सबई गंभीर हैं। जा मैं पूरे बिसवास सें कैत। जो सोउ मोरो दावा है कै साहित्य के जौंन बिसय ई में दये गये हैं ऊपै बुंदेली में लेखन लगभग नई मिलत। बुंदेली में कबतन कौ तौ सागर लहरात है, पै गद्य ऊ तुलना में भौत कम है। जौ संग्रह ऊ कमी खों पूरौ करबे में रंचक योगदान करहै।

संग्रह के लेखन खों पढ़बे, सुदारबे में हमारे पुराने मित्र श्री सुरेन्द्र शर्मा ''शिरीष'' जी ने भौतई मैनत करी। वे बुन्देली के जनवा साहित्यकार हैं। इतै भोपाल में बुन्देली में टाइप कराबौ भौतई कठन है। सो हमने अपने मित्र श्री राघवेन्द्र उदैनियाँ खों जा जिम्मेदारी दई। उन्ने लेख टाइप कराबे की व्यवस्था करी। उदैनियाँ जी बुन्देली के अच्छे कवि-लेखक हैं। इन दोउ जनन कौ सहयोग न मिलतो तौ जा पोथी अबै न बन पाउती। उन दोउ जनन के सहयोग के लानें मैं पूरे मन से धन्नवाद देत।

एक बात और। संग्रह में दो लेख जानबूझकें ऐसे सोई रखे है जिनमें भूमिका औ टिप्पणी तो हिन्दी में है औ उदाहरन बुंदेली कवतान के हैं। पैलो लेख है बुन्देली लोकगीतों में रामकथा औ दूसरौ बुंदेली स्वरूप विकास के विविध आयाम। दोई लेख अपने-अपने विषै में खास हैं। एक में लोकगीतन कौ सांसक्रतिक सरूप है तो दूसरे में बुंदेली विकास कौ इतहास। ऐसौ मैंने जानबूझ कें करो है जीसें मोरे लेखन के ढ़ंग की तनक-मनक झलक मिल जाय औ बुंदेली काव्य कौ परिचय सोई हो जाय।

संग्रह को नांव मैंने जानबूझ कै 'बुंदेली विविधा' रखो है, कायसें ईमें कई विधायें मिली जुरी हैं। उनसें बुंदेली के कई रूपन की बानगी मिलहै। मोरी सोई परख हो जैहे।

आप सब विद्वान संग्रह खौं देखकें जो कछू अच्छो-बुरओ लगै, ऊसें मोय सूचित करबे की किरपा करलौ तो मोय अपने को सुधारबे की प्रेरना मिल है। जय बुंदेली-जय बुंदेलखंड।

***

(पहले फ्लैप का शेष)

लघु शोध प्रबंध : लगभग 20 लघु शोध प्रबंध मेरे निर्देशन में प्रस्तुत।

संपादन : 'नव-ज्योति', 'राष्ट्रगौरव', 'संज्ञा' व 'बंधु' पत्रिकाओं का संपादन।

सम्मान : महामहिम उपराष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा जी द्वारा अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन की 'साहित्य श्री' उपाधि से सम्मानित तथा सम्मेलन द्वारा सर्वोच्च राष्ट्रीय अलंकरण 'भारत भाषा भूषण' के अतिरिक्त अनेकानेक पुरस्कारों से सम्मानित।

प्रशासनिक अनुभव : ◆40 वर्षों तक हिंदी के आचार्य, विभागाध्यक्ष एवं स्नातक व स्नातकोत्तर प्राचार्य, म.प्र. शासन के उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत महाविद्यालय सेवा के अंतर्गत। ◆दो वर्ष तक महाकवि केशव अनुसंधान केंद्र ओरछा (रीवा वि.वि.) के संचालक (डायरेक्टर)। ◆अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष संचालक आदि।

स्थायी निवास : ए-7 फॉरचून पार्क, जी-3 गुलमोहर, भोपाल-462039

मोबा. : 94253-76413

फोन : (0755) 4902309

AYAN PRAKASHAN

अयन प्रकाशन

साहित्य संस्कार के 38 वर्ष

ISBN 978-93-87622-29-6